B-2
L-18
Modern
India

क्रांतिकारी आंदोलन-द्वितीय चरण

- 1922 में असहयोग आंदोलन की वापसी के गांधी के आकस्मिक निर्णय ने युवाओं को स्तब्ध कर दिया, जो युवा अपना स्कूल व कालेज छोड़कर अथवा स्वराज प्राप्ति के उद्देश्य से अपना सब कुछ त्यागकर असहयोग आंदोलन से जुड़े थे तथा एक वर्ष के भीतर स्वराज का लक्ष्य उन्हें आकर्षित कर रहा था, किन्तु जब आंदोलन वापस हुआ तो युवाओं के समक्ष एक शून्य की स्थिति उत्पन्न हो गयी और ऐसे में उन्हें क्रांति का मार्ग ही सबसे उचित लगा।
- 1917 की रूसी क्रांति की सफलता, निरंकुश शोषणकारी सत्ता पर सर्वहारा की जीत मानी गयी। मार्क्स के विचारों से प्रेरित यह क्रांति

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

किसी भी प्रकार के शोषण का विरोध कर रही थी अतः युवाओं का समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक होने लगा और मुख्यतः साम्यवाद सत्ता परिवर्तन के लिए क्रांति को महत्वपूर्ण मानता है, इसकी प्रेरणा से भी युवा क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर आकर्षित हुआ।

स्वरूप / रणनीति

- द्वितीय चरण के क्रांतिकारियों ने हिंसा को अंतिम अस्त्र माना और क्रांति को केवल परिवर्तन के अर्थ में ही नहीं बल्कि प्रगति व पुनरुत्थान के संदर्भ में भी देखा।
- इन क्रांतिकारियों ने व्यक्तिगत शौर्य व बलिदान को आवश्यक मानते हुए जनता को भी क्रांति की वास्तविक परिभाषा से अवगत कराने का प्रयास किया अर्थात् अब क्रांतिकारी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विचारों को आम जनता से जोड़ने का प्रयास किया गया और इस अर्थ में यह आंदोलन जैसी दिखायी देने लगी।

- इन क्रांतिकारियों को बेहतर ज्ञान था कि क्रांति को सफल बनाने के लिए ठोस आर्थिक आधार की आवश्यकता होगी और इसी संदर्भ में उन्होंने काकोरी क्रांतिकारी घटना को अंजाम देकर सार्वजनिक खजाने की लूट की और यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वह अविभाज्य घटना सिद्ध हुई जहां से अब भारतीयों का अपनी स्वतंत्रता के लिए किसी भी बड़ी से बड़ी घटना को अंजाम देने के प्रति अनुराग स्पष्ट हो गया।

- क्रांतिकारियों ने धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को अपनाते हुए क्रांति के लिए सामाजिक दायरे को बढ़ाने का प्रयास किया। इसीलिए इस चरण में

KOS IAS GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR ®

प्रायः सभी वर्गों की उपस्थिति दिखायी देती है।

- इस क्रांतिकारिता को एक नया आयाम तब मिला, जब सूर्यसेन (मास्टर दा) के नेतृत्व में इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी का 1930 में बंगाल में गठन किया गया। इस संगठन में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता के साथ चटगांव शस्त्रागार को लूटने की क्रांतिकारी योजना बनायी गयी। इस गतिविधि में ब्रिटिश सेना से लड़ते हुए प्रीतिलता वाडेदार शहीद हो गयी और कल्पना जोशी को गिरफ्तार कर लिया गया। यह दौर बंगाल में छात्राओं की क्रांतिकारी भावनाओं के लिए भी जाना जाता है। जब उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध क्रांति का मार्ग अपना लिया उदाहरणस्वरूप बीना दास नाम छात्रा ने दीक्षांत समारोह में डिग्री लेते समय गवर्नर को

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

गोली मार दी।

* पहले चरण की क्रांतिकारी गतिविधियों में क्षेत्रीयता का भाव अधिक शामिल था किंतु अब राष्ट्रीय स्वरूप मजबूत होने लगा और 1924 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की गयी जिसे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में रूपांतरित कर दिया गया जो स्पष्ट कर देता है कि ये क्रांतिकारी समाजवादी विचारों से प्रेरित थे और अब इनका लक्ष्य केवल राजनैतिक आजादी ही नहीं रही बल्कि सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता को प्राप्त करना भी हो गया।

* क्रांतिकारियों ने संविदा पत्र तैयार कर क्रांतिकारी गतिविधियों में समानता लाने का प्रयास किया और प्रथम चरण के संगठनों को और व्यवस्थित

KGS IAS

करने का प्रयास किया तथा प्रेस व साहित्य की मदद से इन्होंने क्रांति के आदर्शों को जनता तक पहुंचाने का प्रयास किया और इसी संदर्भ में भगवती चरण वोहरा ने 'फिलॉसाफी आफ बम' नामक पुस्तक लिखी।

- लाला लाजपतराय जो साइमन कमीशन के विरोध का लाहौर में नेतृत्व कर रहे थे, पुलिस लाठीचार्ज में शहीद हो गए तो भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव ने इसकी प्रतिक्रिया में सॉंडर्स की हत्या कर दी। इसके बाद पब्लिक सेफ्टी बिल व ट्रेड डिस्प्यूट एक्ट के विरोध में जो क्रमशः संगठन बनाने, सभा आयोजित करने तथा हड़ताल न करने का कानून बनाया जा रहा था और भारतीय नेतृत्वकर्ताओं के विरोध के बावजूद अंग्रेज इस कानून को पारित करवाने के लिए तत्पर थे अतः इसके विरोध

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

में भगतसिंह व बटुकेश्वरदत्त ने केन्द्रीय असेंबली में बम फेंका और इसे, "बहरों को सुनाने के लिए किया गया धमाका" कहा।

- इन्होंने जानबूझकर अपनी गिरफ्तारी करवायी जिससे अदालत का प्रयोग वे अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने में कर सके और यह संदेश दिया कि क्रांति केवल छिपकर वार नहीं करती, स्मरणीय है कि उस समय आम जनता को क्रांति के विरुद्ध यह कहकर भड़काया जा रहा था कि हिंसक घटना को अंजाम देकर क्रांतिकारी तो छिप जाते हैं और जनता को पुलिस कार्यवाही का शिकार होना पड़ता है।

विशेष — भगतसिंह ने "द पीपुल" नामक पेपर में "मैं नास्तिक क्यों हूं" शीर्षक से लेख

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

लिखकर स्पष्ट किया कि अंतर्राष्ट्रीय अराजकता, सामाजिक असमानता, शोषण तथा गरीबी की व्यापकता को देखते हुए मैं नहीं मान सकता कि ईश्वर का अस्तित्व है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन

महत्वपूर्ण बिन्दु :-

- 19वीं सदी आते-आते भारतीय समाज अनेक कुरीतियों से ग्रस्त हो चला था और हमारा सामाजिक ढाँचा ऐसी स्थिति में आ चुका था कि अब सुधार अवश्यंभावी हो गए थे।

- 1813 के एक्ट से ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत आने की छूट दिए जाने के बाद धर्मांतरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला और अंग्रेजों ने अपनी नस्लीय श्रेष्ठता को इस तरह प्रचारित करना शुरू किया कि यह आशंका होने लगी कि पश्चिमी सभ्यता भारतीय संस्कृति को कहीं आच्छादित न कर लें।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR